पांच तत्वों से न्यारी मैं हूँ अखण्ड ज्योति
आत्मा
परमधाम में रहने वाला मेरा परम पिता
परमात्मा
सर्व गुण सम्पन्न था जब आया यहाँ पार्ट
बजाने
देह अभिमान में आकर मैंने लूटा दिए सारे
खजाने
देहिक सुख पाने के लिए मैंने विकर्म किए हजार
विकारों को अपनाता गया खाकर माया से हार
विकारों को समझा मैंने असली सुख का
आधार
जन्म जन्म चढ़ता गया मुझ पर विकर्मों का
भार
भुला अपना ज्योति स्वरूप देह को सजाता
गया
पापों का बोझ चढ़ाकर अपना पार्ट बजाता
गया
बढ़ते ही गए दु:ख जीवन में अशांति ने डाला

डेरा
देहभान के कारण मुझे सर्व समस्याओं ने घेरा
तड़पन बढ़ती गई मेरी सच्चे सुख की आस में
सच्ची शांति मुझे मिलेगी जाऊं अगर वनवास
में
काम ना आया उपवास काम न आया वनवास
भटकती हुई आत्माओं का टूटा खुद से विश्वास
परमधाम तक पहुंची दुखों से छुड़ाने की पुकार
दुखों से हमें छुड़ाने आया परमपिता निराकार
समझाया हमें बाबा ने देह अभिमान निकालो
मुझसे योग लगाकर अपनी आत्म ज्योति
जलालो
खुद को भूलो समझो मैं हूँ आत्म ज्योति
अखण्ड
सर्व विकार भस्म होंगे जब योगाग्नि होगी
प्रचंड
योगाग्नि में जलकर तुम जब पावन बन जाओगे
तब ही सुख शांति भरा जीवन स्वर्ग में पाओगे
ॐ शांति